श्री पंच बालयति पूजन

रचयिता - श्री रविन्द्र जी आत्मन कृत

प्रस्तुति - तत्वचर्चा

Tatva charcha
Ek Shuruvaat

/Tatvacharcha

GET IT ON Google Play /Tatvacharcha

स्थापना

हे ब्रह्मचर्य के धनी ब्रह्ममय, परम पूज्य त्रिभुवन स्वामी,
हे पंच बालयती तीर्थंकर, तुम सम परिणति हो जगनामी।
आनन्दमयी निज परम ब्रह्म, मैंने प्रत्यक्ष निहारा है,
उल्लास हृदय में छाया प्रभु, मैंने अब तुम्हें चितारा है।
ज्यों दर्पण सन्मुख हो जग में, मोही तन रूप सजाते हैं,
त्यों तुम पूजन कर हे विभुवर, हम अपना भाव बढ़ाते हैं।

Tatva charcha
Ek Shuruvaat
/Tatvacharcha
GET IT ON Google Play /Tatvacharcha

(सोरठा)

Tatva charcha
Ek Shuruvaat

वासुपूज्य, मल्लि, नेमि, पार्श्व प्रभु, महावीर जिन,
नमत होय सुख चैन, द्रव्य-दृष्टि धर पूज हूँ

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य मल्लिनाथ नेमिनाथ पार्श्वनाथ महावीर पंच बालयति तीर्थंकरा ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वानं।

ॐ ही श्री वासुपूज्य-मल्लिनाथ नेमिनाथ-पार्श्वनाथ-महावीर पंच बालयति तीर्थंकररा ! अत्र तिष्ट तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐॐ यहीं श्री वासुपूज्य-मल्लिनाथ-नेमिनाथ-पार्श्वनाथ-महावीर पंच बालयति तीर्थंकरा ! अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषद् सन्निधिकरणम्।

/Tatvacharcha
GET IT ON Google Play /Tatvacharcha

(अष्टक)

निज में जुड़ती है दृष्टि जभी, समता का सहज प्रवाह बहे,
आनन्द अपूर्व प्रकट होवे, तब जन्म-जरा-मृत नहीं रहे।
है जन्म-जरा-मृत रहित प्रभु, मम आज दृष्टि में आया है,
समरस से तृप्त रहूँ विभुवर, मैंने जल यहाँ चढ़ाया है।
अतिशय है ब्रह्मभाव मेरा, कामादिक दुर्मति भागी है,
प्रभु ब्रह्मचर्य परमानन्द पा, अतिशय प्रतीति उर जागी है।

ॐ ह्रीं श्री पंचबालयतितीर्थंकरेभ्योः जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

Tatva charcha
Ek Shuruvaat

/Tatvacharcha

GET IT ON Google Play /Tatvacharcha

(अष्टक)

Tatva charcha
Ek Shuruvaat

निज परम शांति शीतलता से, आपूर्ण सरोवर मम प्रभु है,
भव रहित जहाँ भव ताप नहीं सर्वोत्कृष्ट सुखमय विभु है।
जब ताप नहीं तब चन्दन का भी, काम नहीं कुछ शेष रहा,
चन्दन प्रभु यहीं चढ़ाया है, निस्पाप-ताप निज रूप गहा।
अतिशय है ब्रह्मभाव मेरा, कामादिक दुर्मति भागी है,
प्रभु ब्रह्मचर्य परमानन्द पा, अतिशय प्रतीति उर जागी है।

ॐ ह्रीं श्री पंचबालयतितीर्थंकरेभ्योः संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा

/Tatvacharcha

GET IT ON Google Play /Tatvacharcha

(अष्टक)

Tatva charcha
Ek Shuruvaat

छिलके से ढ़का हुआ अक्षत, छिलका हटते ही प्रकट हुआ,
पर्याय दृष्टि हटते ही त्यों, मम अक्षय प्रभु प्रत्यक्ष हुआ।
निज अक्षय प्रभु के आश्रय से ही, राग-द्वेष का होवे क्षय,
ये अक्षत यहाँ चढ़ाये हैं, मैंने पाया है पद अक्षय।
अतिशय है ब्रह्मभाव मेरा, कामादिक दुर्मति भागी है,
प्रभु ब्रह्मचर्य परमानन्द पा, अतिशय प्रतीति उर जागी है।

ॐ ह्रीं श्री पंचबालयतितीर्थकरेभ्योः अक्षयपद प्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

/Tatvacharcha
GET IT ON Google Play /Tatvacharcha

(अष्टक)

निष्काम पूर्ण निज वैभव का, मैं तृप्त हो गया दर्शन कर,
संकल्प विकल्प प्रवेश न हों, रहते सीमा से ही बाहर।
अद्भुत रहस्य यह पाया है, इच्छाओं की उत्पत्ति नहीं,
बस निज स्वभाव में मग्न रहूँ, ये पुष्प चढ़ाता आज यहीं।
अतिशय है ब्रह्मभाव मेरा, कामादिक दुर्मति भागी है,
प्रभु ब्रह्मचर्य परमानन्द पा, अतिशय प्रतीति उर जागी है।

ॐ ह्रीं श्री पंचबालयतितीर्थंकरेभ्योः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

/Tatvacharcha

GET IT ON Google Play /Tatvacharcha

(अष्टक)

समरस अमृत का सागर है, क्षुत् पीड़ा का अस्तित्व नहीं,
त्यागोपादान शून्य पर से, कुछ ग्रहण त्याग कर्तृत्व नहीं।
जो निज स्वभाव से च्युत होकर तन के आश्रय से भूख लगी,
ये नैवेद्य यहीं समर्पित है स्वाश्रय से भव की भूख भगी।
अतिशय है ब्रह्मभाव मेरा, कामादिक दुर्मति भागी है,
प्रभु ब्रह्मचर्य परमानन्द पा अतिशय प्रतीति उर जागी है।

ॐ ह्रीं श्री पंचबालयतितीर्थंकरेभ्योः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

/Tatvacharcha
GET IT ON Google Play /Tatvacharcha

(अष्टक)

प्रकाशत्व शक्ति शाश्वत मेरी है, सहज प्रकाशित मम स्वभाव,
सब बाह्य प्रकाश अनावश्यक, उसमें नहिं दिखता निजस्वभाव।
बाहर की दृष्टि छोड़ अहो ! स्वसन्मुख चिन्मय ज्योति जगे,
ये दीपक यहीं विसर्जित है, अन्तर लौ से तम मोह भगे।
अतिशय है ब्रह्मभाव मेरा, कामादिक दुर्मति भागी है,
प्रभु ब्रह्मचर्य परमानन्द पा, अतिशय प्रतीति उर जागी है।

ॐ ह्रीं श्री पंचबालयतितीर्थंकरेभ्यो: मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

Tatva charcha
Ek Shuruvaat
/Tatvacharcha
GET IT ON Google Play /Tatvacharcha

(अष्टक)

दश धर्ममयी शाश्वत सुगन्ध चेतन नंदन में महक रही,
दुर्गन्धित भाव विकारों का, किंचित भी जहाँ अस्तित्व नहीं।
यह धूप यहीं प्रभु छोड़ रहा, बाहर की दृष्टि हटाई है,
स्वसन्मुख होकर अब प्रभु सम, स्वधर्म सुरभि शुभ पायी है।
अतिशय है ब्रह्मभाव मेरा, कामादिक दुर्मति भागी है,
प्रभु ब्रह्मचर्य परमानन्द पा, अतिशय प्रतीति उर जागी है।

ॐ ह्रीं श्री पंचबालयतितीर्थंकरेभ्योः अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

/Tatvacharcha GET IT ON Google Play /Tatvacharcha

(अष्टक)

Tatva charcha
Ek Shuruvaat

प्रभु मुक्त स्वरूप सहज पाया,आनन्द अपूर्व सु छाया है,
शिवफल की भी वांछा न रही, अन्तर पुरुषार्थ जगाया है।
ज्ञानी तो फल वांछा त्यागे, अज्ञानी त्याग का फल चाहे,
फल चढ़ा रहा हूँ है जिनवर, बस ये विकल्प भी नहीं आये।
अतिशय है ब्रह्मभाव मेरा, कामादिक दुर्मति भागी है,
प्रभु ब्रह्मचर्य परमानन्द पा, अतिशय प्रतीति उर जागी है।

ॐ ह्रीं श्री पंचबालयतितीर्थकरेभ्योः मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

/Tatvacharcha
GET IT ON Google Play /Tatvacharcha

(अष्टक)

प्रभु सर्व विशुद्ध स्वतत्व लखा, अब दृष्टि न पल भी हटती है,
होता उपयोग जभी बाहर, एकाग्र भावना जगती है।
एकाग्र रहे उपयोग सदा, यह ही निश्चय से अर्ध कहा,
जिससे अविचल अनर्घ पद हो, प्रभु बाह्य अर्घ इसलिये तजा।
अतिशय है ब्रह्मभाव मेरा, कामादिक दुर्मति भागी है,
प्रभु ब्रह्मचर्य परमानन्द पा, अतिशय प्रतीति उर जागी है।

ॐ ह्रीं श्री पंचबालयतितीर्थंकरेभ्योः अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

/Tatvacharcha
GET IT ON Google Play /Tatvacharcha

जयमाला

Tatva charcha
Ek Shuruvaat

(दोहा)

वासुपूज्य श्री मल्लिजिन, नेमि पार्श्व महावीर।
बाल ब्रह्मचारी सुजिन, नमत मिटै भवपीर।।

/Tatvacharcha

GET IT ON Google Play /Tatvacharcha

(पद्धरि)

जय वासुपूज्य देवाधि देव, मंगलमय मंगल करन एव,
जय चिदानन्द चिद्रूप सार, धारी निज महिमा निर्विकार।
पूरब भव में तुमने स्वामी, सुन युगमन्धर प्रभु की वाणी,
नित आत्मभावना आई थी तीर्थंकर प्रकृति बंधाई थी।।
तप कर महा शुक्र विमान गये, चय नृप वसुपूज्य के पुत्र भये,
कल्याणक देव मनाये थे, पर निज में आप समाये थे।
भोगों को नहीं स्वीकार किया, दूरहि से प्रभुवर छोड़ दिया,
हो बालयति दीक्षा धारी, प्रकटाया निज पद सुखकारी।।

Tatva charcha
Ek Shuruvaat
/Tatvacharcha
GET IT ON Google Play /Tatvacharcha

(पद्धरि)

कर रहा अर्चना मल्लिनाथ, भवि दर्शन कर होते सनाथ,
वट वृक्ष विशाल गिरा लख कर, पूरब भव में दीक्षा धरकर।
तीर्थंकर पद का बन्ध किया, अपराजित स्वर्ग प्रयाण किया,
तँहते चयकर अवतार लिया, शादी के समय वैराग लिया।
छः दिन छद्मस्त रहे स्वामी, नव केवल लब्धि रमा पायी,
भव्यों को शिवपद दर्शाया, सम्मेदशिखर से शिव पाया।।

Tatva charcha
Ek Shuruvaat
/Tatvacharcha
GET IT ON Google Play /Tatvacharcha

(पद्धरि)

जय नेमीश्वर महिमा महान सुन पशु क्रन्दन वैराग्य ठान,
छोड़ें पशु अरु राज़ुल छोड़ी, भव बन्धन की कड़ियाँ तोड़ी।
जग को अनुपम आदर्श दिया, प्रभु धर्म अहिंसा प्रकट किया,
गिरनार शिखर से शिव पाया प्रभु चरणों में हम सिर नाया।।

Tatva charcha
Ek Shuruvaat

/Tatvacharcha

GET IT ON Google Play /Tatvacharcha

(पद्धरि)

Tatva charcha
Ek Shuruvaat

जय पार्श्वनाथ तव गुण अपार, गणधर भी पावें नहीं पार,
इक दिवस सभा में विराज रहे, साकेत नरेश की भेंट लिए।
इक दूत वहाँ पर आया था, साकेत विभव दरशाया था,
ऋषभादि प्रभु स्मरण हुआ, वैराग्य हृदय में जाग उठा।
दीक्षा ले निज में मग्न हुए, तब कमठ घोर उपसर्ग किये,
अप्रभावित अचल रहे जिनवर, परमात्म दशा प्रगटी सत्वर।
ऐसी स्थिरता प्रभु पाऊँ, बस परम ब्रह्म में रम जाऊँ।।

/Tatvacharcha
GET IT ON Google Play /Tatvacharcha

(पद्धरि)

हे महावीर विभु परम धीर, महिमा सागर से भी गम्भीर।
शादी प्रसंग जब आया था, प्रभुवर तुमने ठुकराया था,
दीक्षा ले द्वादश वर्ष प्रभो, दुर्द्धर तप धारा आप विभो।
निज ध्यान अग्नि द्वारा जिनेश,कर्मों को ध्वस्त किया अशेष,
अन्तिम तीर्थंकर अभिरामी मैं करूँ वन्दना जग नामी।
तब दर्शन करके हे स्वामी मैंने निज महिमा पहिचानी,
प्रभु प्रबल पराक्रम प्रगटाऊँ रागादि भाव पर जय पाऊँ।
जो तीर्थ आपने प्रगटाया, वह भी स्वामी मुझको भाया,
कीचड़ को लगाकर धोना क्या, अरु कूद अग्नि में रोना क्या।।

Tatva charcha
Ek Shuruvaat
/Tatvacharcha
GET IT ON Google Play /Tatvacharcha

(पद्धरि)

श्रद्धान परम जागा मन में, सुख शान्ति सदा है अन्तर में,
परमाणु मात्र भी नहीं पर में, मेरा सर्वस्व सदा मुझ में।
उपयोग नहीं पर में भागे, अतिचार नहीं किंचित् लागे,
प्रभुवर ! निज में ही रम जाऊँ, निज परम ब्रह्मचर्य प्रगटाऊँ।।

ॐ ह्रीं श्री पंचबालयतितीर्थंकरेभ्योः महार्घ्य निर्वपामीति स्वाहा

Tatva charcha
Ek Shuruvaat
/Tatvacharcha
GET IT ON Google Play /Tatvacharcha

परम ब्रह्म आनन्दमय, चित् स्वभाव अविकार।
समयसार में लीन हो, होऊँ भव से पार।।

इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्